प्रतिभा

2020-2021

हिन्दी साहित्य सभा

संत अलॉयसियस स्वशासी महाविद्यालय

Reaccredited 'A+' by NAAC (CGPA 3.68/4.00)
College with Potential for Excellence by UGC
DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT
Jabalpur, Madhya Pradesh, India

साहित्य सभा कार्यकारिणी

मानसी सक्सेना
अध्यक्ष

छवि त्रिपाठी
उपाध्यक्ष

नेहा मिश्रा
सचिव

रिशिता तिवारी
सह सचिव

मुस्कान यादव
कोषाध्यक्ष

वंशिका जैन
सदस्य

श्रेया पटेल
सदस्य

संयाग प्रभा दुबे
सदस्य

शारदा पटेल
सदस्य

जानवी पंजवानी
छात्र संपादक

कपिल देव गुप्ता
छात्र संपादक

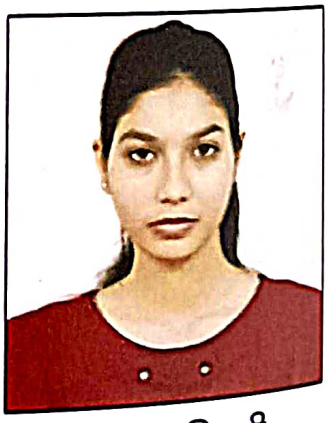

समीक्षा तिवारी
छात्र संपादक

प्रतिभा

2020-2021

हिन्दी साहित्य सभा

संत अलॉयसियस स्वशासी महाविद्यालय

Reaccredited 'A+' by NAAC (CGPA 3.68/4.00)
College with Potential for Excellence by UGC
DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT
Jabalpur, Madhya Pradesh, India

कंडिका

क्रमांक	शीर्षक	विद्यार्थी का नाम	कक्षा
1	संपादकीय	जानवी पंजवानी	बी.ए. तृतीय वर्ष
2	सोशल मीडिया : टूटती सीमाएँ	यक्षिका अग्रवाल	बी.कॉम. तृतीय वर्ष
3	सोच विचार	सुष्मिता तिवारी	बी.कॉम. प्रथम वर्ष
4	कभी न रूक कभी न हार	काजोल चक्रवर्ती	बी.कॉम. तृतीय वर्ष
5	वीर जवान	श्री गुप्ता	बी.कॉम. द्वितीय वर्ष
6	स्वच्छता अभियान : जीवन की अनिवार्यता	सुप्रिया रानी	बी.ए. तृतीय वर्ष
7	माँ	जानवी पंजवानी	बी.ए. तृतीय वर्ष
8	भारतीय नारी	ज्वैल नरोन्हा	एम.एस.सी, चतुर्थ सेम.
9	माँ ही मेरी दुनिया, माँ ही मेरा संसार	अभिनीत पटैल	बी.ए. प्रथम वर्ष
10	कोविड–19 का हमारे जीवन पर प्रभाव	नेहा मिश्रा	बी.कॉम. द्वितीय वर्ष
11	भारतीय नारी : परंपरा और आधुनिकता का संघर्ष	वंदना कुशवाहा	बी.ए. द्वितीय वर्ष
12	नारी का संघर्ष	प्रतिक्षा नागदेव	बी.कॉम. प्रथम वर्ष
13	सपनों में रख आस्था	मानसी सक्सेना	बी.ए. तृतीय वर्ष
14	रिश्ता	अमानत सैम्यूल मिश्रा	बी.एस.सी.
15	आधुनिक शिक्षा	काजोल चक्रवर्ती	बी.कॉम. तृतीय वर्ष
16	ऑनलाइन शिक्षा : समाधान और समस्या	मुस्कान यादव	बी.ए. तृतीय वर्ष
17	बेटी हूँ	वैभव झारिया	बी.सी.ए. प्रथम वर्ष
18	मुज़रिम आज़ाद	एंजिला सैलेस्टीन	बी.ए. प्रथम वर्ष
19	लक्ष्य	सयांग प्रभा दुबे	बी.ए. प्रथम वर्ष
20	समाज में जागरूकता लाओ	अमानत सैम्यूल मिश्रा	बी.एस.सी. प्रथम वर्ष
21	कविता	मुस्कान यादव	बी.ए. तृतीय वर्ष
22	वर्ष 2020 संभावनाओं का वर्ष	पल्लवी केवट	बी.ए. तृतीय वर्ष
23	आदर्श विद्यार्थी	सयांग प्रभा दुबे	बी.ए. प्रथम वर्ष

000 — 000

संपादकीय

भारत नाम सुनकर ही हमारा सिर गर्व से ऊँचा हो जाता है। बात भारत की हो या भारतीय भाषाओं की हिन्दी को सर्वश्रेष्ठ पद पर रखा गया है। हिन्दी एक लोकप्रिय भाषा है और बात की जाए हिन्दी पत्रिकाओं की तो हिंदी पत्रिकाओं का हमारे दैनिक जीवन में अलग ही महत्व है। विषय कोई भी हो व्यापार देश दुनिया आदि, हिंदी पत्रिका हर घर का हिस्सा है।

प्रतिभा पत्रिका में हम विभिन्न विषयों पर प्रकाश डाल उन विषयों को उजागर करते हैं। लोगों के छुपे गुणों को निखार उन्हें समाज का हिस्सा बनने का अवसर प्रदान कर उन्हें अपनी कलाओं को प्रकाशित करने का अवसर देते हैं। प्रतिभा उन प्रतिभावान व्यक्तियों के लिए है जो गुणी तो है परंतु सही अवसर खोजने में असमर्थ हैं।

प्रतिभा एक स्वच्छंद पत्रिका है जिसमें आप अपने विचारों को पंख दे सकते हैं। प्रतिवर्ष यह अवसर हमारे महाविद्यालय के कमल रूपी विद्यार्थियों को मिलता है कि वह अपनी कला इस प्रतिभा के माध्यम से प्रस्तुत कर सकें।

"हम सभी के पास समान प्रतिभा नहीं है, लेकिन हमारे पास समान अवसर है अपनी प्रतिभा को विकसित करने के लिए।"

जानवी पंजवानी
समीक्षा तिवारी
कपिलदेव गुप्ता

सोशल मीडिया : टूटती सीमाएँ

यक्षिका अग्रवाल
बी.कॉम. तृतीय वर्ष

वर्तमान जीवन के परिदृश्य में सोशल मीडिया का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। सोशल मीडिया के माध्यम से हम लोगों तक अपने विचार, किसी भी विषय पर जानकारी एवं समस्त विश्व के किसी भी व्यक्ति से सम्पर्क कर सकते हैं। उसके विपरीत, कई सीमाओं एवं नुकसानों के परिणामस्वरूप यह अपनी महत्ता को खोता नजर आ रहा है।

एक सुबह मैं सोशल मीडिया पर खबरें देख रही थी। तभी उसमें एक खबर में लिखा था, "भारत की एक प्रख्यात अभिनेत्री, जो दो बार सर्वश्रेष्ठ नायिका का राष्ट्रीय अवॉर्ड प्राप्त कर चुकी हैं, उनका देहान्त हो गया।" उस खबर में विस्तृत रूप से समझाया गया था कि किस तरह वे जानलेवा केंसर की बीमारी से जूझ रहीं थी एवं अंततः देर रात उनकी मृत्यु हो गयी।

यह खबर पढ़कर मैं आश्चर्य चकित रह गयी एवं तुरंत न्यूज चैनलों व वेब ब्राउजर्स में इसकी सटीकता का पता लगाने हेतु उक्त खबर खेजने लगी। इस तकनीकी विश्व में, खबर की सत्यता की पहचान करना बहुत सरल है। खोज करने पर मुझे पता चला कि वह स्वस्थ एवं जीवित हैं। मैं यह व्यक्त करने में असमर्थ हूँ कि उस समय मैंने क्या महसूस किया। मानव इतना क्रूर कैसे हो सकता है? इस तरह की समस्त सीमाओं को पार करते हुए किये गए क्रियाकलाप से उन्हें किस प्रकार की खुशी प्राप्त होती होगी? क्या मृत्यु एक मजाक है? एवं क्या दूसरों का जीवन हमारे लिए कोई महल नहीं रखता? यह सभी प्रश्न उस समय मेरे दिमाग में लगातार उठ रहे थे।

यदि यही घटना हमारे परिवार एवं मित्रों में से किसी के साथ घटित हो, तब हमारा व्यवहार क्या होगा? इस बात को अपने मस्तिष्क में रख कर ही हमें इन सार्वजनिक मंचों पर कुछ संपादित करना चाहिए। इन गलत एवं अनर्थपूर्ण कृत्यों को छोड़कर हमें इस अभूतपूर्व मंच का उपयोग अच्छी खबरें, भावनाएँ, प्रेम मिलन एवं स्वस्थ विचार–विमर्श हेतु करना चाहिए।

सोच-विचार

सुष्मिता तिवारी
बी.कॉम. प्रथम वर्ष

वो भी क्या बचपना था जो बहुत बेहतरीन गुजरा। न दुनियादारी की समझ, न अच्छे बुरे की क्योंकि; तब तो हमें बस मस्ती करनी थी। बिना किसी फिकर के अपने में मगन रहना दिन रात मजे करना था। पर समय है, कब बदल जाएगा तुम्हें पता भी नहीं चलेगा। लोग बदल जाएंगे पता भी नहीं चलेगा। तुम और तुम्हारे दोस्त साथ होंगे कि भी नहीं पता ही नहीं चलेगा। तुम जब अपने जीवन में व्यस्त हो जाओंगे तब तुम सब जानते होगे कि जीवन में हंसी–खुशी, दुख–गम सब आते जाते रहेंगे और तुम्हें इन सब का सामना करना पड़ेगा। तब तुम्हें कोई नहीं बताएगा कि तुम कहाँ सही और कहाँ ग़लत हो। अपने जीवन में रोज कुछ ऐसा काम करो जहाँ तुम रोज कुछ ना कुछ सीख सको। जब गलत करो तो सौ बार सोचो गलती कहाँ हुई और उसे नजरअंदाज करने के बजाय उस पर रोशनी डालो और अपने आप को सुधारो। जीवन बहुत छोटा है और उतना ही सुंदर है। अपना जीवन और खूबसूरत बनाओ। अपनी पहचान बनाओ ताकी लोग तुम्हें जानें। जीवन सब के पास है, अच्छा या बुरा बनाना तुम्हारे हाथ में है। सब के पास दो रास्ते होते हैं। वो हमें चुनना है कि हम क्या चाहते हैं। सब की अपनी–अपनी सोच है। तुम कितने समझदार हो ये तुम्हारे विचारों से पता चलता है। तुम कितने खूबसूरत हो, तो तुम्हारे चेहरा नहीं तुम्हारे विचार और दोस्त बताते हैं।

लघुकथा

कभी न रूक, कभी न हार

काजोल चक्रवर्ती
बी.कॉम. 'आनर्स' तृतीय वर्ष

एक संपन्न राज्य की सम्पदा से जलकर वहां के राजा के कई शत्रू हो गए थे। एक रात राजा के शत्रुओं ने महल के पहरेदारों को मिला लिया और राजा को बेहोश कर अगवा कर लिया। इसके बाद राजा के शत्रुओं ने राजा को पहाड़ की एक गुफा में बंद कर दिया और एक बड़े से पत्थर से गुफा के मुहाने को ढँक दिया।

राजा को जब होश आया तो उस अँधेरी गुफा में अपनी दशा देखकर घबरा उठा। जब उस अँधेरी गुफा में उसे कुछ करते धरते ना बना तो उसे अपनी माता की कही एक बात याद आ गई, "कुछ तो कर, यूँ ही मत मर"। माँ का दिया मंत्र याद आते ही राजा की निराशा दूर हो गई और उसने अपनी पूरी ताकत लगा कर अपने हाथों की जंजीरों को तोड़ दिया। तभी अँधेरे में उसका पैर एक सांप पर पड़ गया और सांप ने उसे काट लिया। राजा फिर घबराया, किन्तु अगले ही पल उसे फिर अपनी माँ का दिया वह मंत्र याद आया, "कुछ तो कर, यूँ ही मत मर।" उसने तत्काल अपनी कमर से कटार निकल ली और उस स्थान को चीर दिया जहाँ सांप ने काटा था। लेकिन खून की धार बह निकलने से वह फिर घबरा गया!

लेकिन फिर उसने अपनी माँ के मंत्र से प्रेरणा पाकर अपनी कमर पर लपेटे वस्त्र से घाव पर पट्टी बांध दी, जिससे रक्त बहना बंद हो गया। इतनी सारी मुश्किलें हल होने के बाद उसे इस अँधेरी गुफा से बाहर निकलने की चिंता सताने लगी। भूख, प्यास भी उसे व्याकुल कर रही थी। उस अँधेरी गुफा से निकलने का उसे जब कोई रास्ता न दिखा तो वह फिर निराश हो उठा, लेकिन फिर अगले ही पल उसे अपनी माँ का दिया मंत्र याद आया, "कुछ तो कर, यूँ ही मत मर"। वह उठा और उसने अपनी पूरी ताकत से गुफा के मुँह पर लगे पत्थर को धकेलना शुरू कर दिया। बहुत बार प्रयास करने पर आखिरकार पत्थर लुढ़क गया और गुफा से निकलकर पुनः अपने महल में चला गया।

वीर जवान

श्री गुप्ता
बी.कॉम. द्वितीय वर्ष

1. एक माँ को अकेला छोड़ कर,
दूसरी माँ की रक्षा करते हो।
एक माँ से दूर हो कर,
दूसरी माँ के आँसू पोछते थे।
एक माँ का सहारा छोड़ कर,
दूसरी माँ का सहारा बनते हो।
क्या किस्मत वाली हैं वो माँएं,
जिनके तुम बेटे बनते हो।

2. शायद वो दिन वापस न आए,
शायद वो घर वापस न आए,
फिर भी माँ तिरंगे को देखकर,
सोचती है कि मेरा लाल,
तिरंगे पर नहीं, वर्दी में वापस आए।

निबंध प्रतियोगिता

स्वच्छता अभियानः जीवन की अनिवार्यता

सुपिया रानी
बी.ए. तृतीय वर्ष

1. **प्रस्तावनाः**— स्वच्छता केवल हमारे घर, सड़क तक के लिए ही जरूरी नहीं होती है। यह देश और राष्ट्र की आवश्यकता होती है। इससे ना केवल हमारा घर, ऑगन ही स्वच्छ रहेगा बल्कि पूरा देश ही स्वच्छ रहेगा। इसी को मद्देनजर रखते हुए भारत सरकार द्वारा चलाया जा रहा स्वच्छ भारत अभियान जो कि हमारे देश के प्रत्येक गाँव और शहर में प्रारम्भ किया या है। जो देश के प्रत्येक गली गाँव को प्रत्येक सड़कों से लेकर शौचालय का निर्माण कराना और देश के बुनियादी ढांचे को बदलना ही इस अभियान का उद्देश्य है।

2. **स्वच्छ भारत का स्वप्नः**— स्वच्छता के महत्व को ध्यान में रखकर ही महात्मा गाँधी जी ने "अंग्रेजों भारत छोड़ो" का आह्वान करने के साथ ही स्वच्छ भारत का स्वप्न संजोया था। वे भारत को अंग्रेजों से मुक्त कराने में तो सफल हो गये किन्तु स्वच्छ भारत का स्वप्न उनके लिए सपना ही बनकर रह गया। "देश भक्ति केवल नहीं, देने से बलिदान स्वच्छ बनायें हिन्द को, यह भी काम महान।।"

3. **स्वच्छ भारत अभियान का प्रारंभः**— भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने महात्मा गाँधी जी के जन्म दिवस 02 अक्टूबर, 2014 को "स्वच्छ भारत अभियान" की उद्घोषणा की। उन्होंने स्वच्छता के महत्व को रेखांकित करते हुए इसे अपनाने पर बल दिया। उन्होंने बताया कि स्वंय स्वच्छ रहने के साथ–साथ अन्य को सफाई के प्रति जागरूक करना हर भारतीय की नैतिक जिम्मेदारी है। सफाई के संदर्भ में भारत संसार के अनेक देशों से पिछड़ा हुआ है। कई देश एसे हैं, किन्तु भारत में गन्दगी का भयंकर प्रकोप है।

4. **स्वच्छ भारत अभियान के उद्देश्यः**— i 2019 तक सभी घरों में पानी की पूर्ति सुनिश्चित कर के गाँवों में पाईप लाईन लगवाना जिससे स्वच्छता बनी

रहे। ii खुले में शौच बंद करवाना जिसके तहत हर साल हजारों बच्चों की मौत हो जाती है। iii लोगों की मानसिकता को बदलना उचित स्वच्छता का उपयोग करके। iv शौचालय उपयोग को बढ़ावा देना और सार्वजनिक जागरूकता को शुरू करना। v गाँवों को साफ रखना। vi सड़कें फुटपाथ और बस्तियाँ साफ रखना। vii साफ–सफाई के जरिए सभी में स्वच्छता के प्रति जागरूकता पैदा करना। viii ग्राम पंचायत के माध्यम से ठोस और तरल अपशिष्ट की अच्छी प्रबंधन व्यवस्था सुनिश्चित करना।

5. **गंदगी के दुष्परिणामः**– भारत के नगरों, महानगरों व गाँवों में भयंकर गंदगी फैली है। नगरों में बजबजाती नालियाँ उफनते सीवर, खुले नाले, गलियों चौराहों पर कूड़े–करकट के ढेर, उन पर भिनभिनाते मक्खी–मच्छर सामान्य बात है। ऐसी स्थिति के मध्य भारत की आबादी का बहुत बड़ा हिस्सा जीवनयापन करता है। इस गंदगी के कारण विभिन्न बीमारियाँ फैलती हैं। बीमारी के कारण उनके काम–धन्धे रूक जाते हैं। इलाज का अतिरिक्त खर्च बढ़ जाता है। परिवार के सदस्यों पर संकट छा जाता है। गरीब और गरीब होता जाता है।

6. **स्वच्छ भारत अभियान का प्रचार–प्रसारः**– "स्वच्छ भारत अभियान" को जन आन्दोलन का रूप देना होगा। यह राष्ट्र भक्ति से जुड़ा कार्य है। जिसके प्रति प्रत्येक भारत वासी का समर्पण अपेक्षित है। किसी सरकार, संस्था, संगठन या व्यक्ति द्वारा यह कार्य पूरा नहीं किया जा सकता है। इसे सफल बनाने के लिए दूरदर्शन, रेडियो, समाचार–पत्र आदि के माध्यम से प्रचार–प्रसार परिचर्चा आदि की आवश्यकता है। भारत की सवा सौ करोड़ आबादी को सफाई के प्रति जागरूक करना अनिवार्य है।

7. **शुभ परिणामः**– "स्वच्छ भारत अभियान" की सफलता भारत के मंगलकारी भविष्य की निर्माता सिद्ध होगी। स्वच्छता रहेगी तो तन स्वस्थ होगा, मन उल्लखित रहेगा। इससे आय में वृद्धि होगी, तो गरीबी मिटेगी। बीमारियों पर होने वाला व्यय बचेगा तथा देश के निवासी स्वस्थ एवं स्वावलंबी बनेंगे। भारत सतत् विकास पथ पर अग्रसर होगा।

8. **उपसंहारः–** महात्मा गाँधी के स्वच्छ भारत के स्वप्न को साकार करने के लिए प्रत्येक भारतवासी को सहयोग करना चाहिए। उसे अपने घर एवं बाहर की सफाई रखनी चाहिए तथा दूसरों को सफाई के प्रति प्रेरित करना चाहिए। यदि सभी स्वच्छता को अपनी आदत बना लेंगे तो भारत में गन्दगी का नामोनिशान नहीं होगा। फलस्वरूप भारत का सम्मान उत्तरोत्तर शिखर की ओर बढ़ता जायेगा।

"स्वच्छ और स्वस्थ होगा,
तभी तो आगे बढ़ेगा इंडिया"

"माँ"

जानवी पंजवानो
बी.ए. तृतीय वर्ष

पता नहीं तू कहाँ है
पता नहीं तू कहाँ है
बता भी दे अब जहाँ है
यादों का ज़ख्म अब तक जिंदा है
तुझे खो कर ए दिल सचमुच शमिंदा है।

आंसू बिखर के टूट से गए हैं
हौसले जैसे छूट से गए हैं
रिश्ते जैसे रूठ से गए हैं
तेरे होने पर तेरी अहमियत न थी
तुझे खो कर तेरी कीमत समझ आई है
चार आनों में शायद घर चल जाता
आज करोड़ों में भी तेरी कमी पाई है।।2

तेरा बुढ़ापा कभी बोझ था
तेरा बुढ़ापा कभी बोझ था
आज खुद एक बोझ हूँ
तेरे आंचल में छुपा नन्हें से अंश की खोज हूँ।।2

चार रोटियों से जहां पेट नहीं भरता था
चार रोटियों से जहां पेट नहीं भरता था
आज एक कौर में मन भर जाता है
तेरे जाने के बाद तेरा अस्तित्व मुझे आज समझ आता है।।2

पता नहीं तू कहाँ है
बता भी दे अब जहाँ है
यादों का जख्म अब तक जिंदा है
तुझे खो कर यह दिल सचमुच शर्मिंदा है।

भारतीय नारी:

ज्वैल नरोन्हा
एम.एस.सी. चुतर्थ सेमेस्टर

सुन्दरी, कान्ता, कलत्र, वनिता, नारी, महिला, अबला, ललना, औरत, कामिनी और रमणी, तेजस्विनी शब्द भारतीय नारी के पर्यायवाची हैं। सबसे पहले परम्परा और आधुनिकता के अन्तर्सम्बन्धों के बारे में मैं कुछ बातें करना चाहूँगी। आज इस आधुनिक युग में भी, समस्त संसार में नारी के लिए कहीं तो बहुत ही उपजाऊ भूमि उपलब्ध है, और कहीं–कहीं वो बंजर जमीन सी असहाय होकर पथरीली चुभन को सह रही है। समुदाय के लिए आधुनिकता की यह क्रान्ति अन्तरविरोधी है। ऐतिहासिक तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि स्त्रियों की सामाजिक आज़ादी और स्त्री–पुरूष समानता की माँग की वैचारिक और प्रबोधन की सैद्धान्तिकी ने ही तैयार की थी। प्राचीन युग से ही हमारे समाज में नारी का विशेष स्थान रहा है। भारतीय समाज में आई सामाजिक कुरीतियाँ, व्यभिचार तथा हमारी परंपरागत रूढ़िवादिता ने भी भारतीय नारी को दीन–हीन कमजोर बनाने में अहम भूमिका अदा की। नारी के अधिकारों का हनन करते हुए उसे पुरूष का आश्रित बना दिया गया। दहेज, बाल–विवाह व सती प्रथा आदि इन्हीं कुरीतियों की देन है। आज का युग परिवर्तन का युग है। भारतीय नारी की दशा में भी अभूतपूर्व परिवर्तन देखा जा सकता है। बावजूद इसके जब भी कोई महिला अपने कर्मक्षेत्र की लक्षमण रेखाओं को लांघकर अपनी पहचान के लिए संघर्ष करती है तो समाज उसे शंका और अविश्वास की दृष्टि से देखता है। यह एक संघर्ष ही तो है। उसे 'घर तोड़ने वाली' या 'परिवार तोड़ने वाली' 'जैसी उपमाओं से विभूषित करता है। निश्चित रूप से नारी ही संस्कृति की सच्ची संवाहिका होती है। माँ, बहन, पत्नी और पुत्री, सखी, और शिक्षिका इस प्रकार नारी के अनेक आयाम हैं। हर हैसियत में वह उत्तम संस्कारों व मूल्यों को यथा संभव दूसरों के दिलोदिमाग में उतारने की चेष्टा करती है।

हर सामाजिक परिघटना में निरंतरता और परिवर्तन के तत्वों का द्वन्द्व मौजूद रहता है। परम्परा से विच्छिन्न आधुनिकता हो ही नहीं सकती। सिद्धांत के स्तर पर आधुनिकता एक सार्वभौमिक मूल्य है, लेकिन अलग–अलग संस्कृतियों, देशों, राष्ट्रों, समाजों में उनके इतिहास–विकास की गति और विशिष्टता के हिसाब से सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन में आधुनिकता–बोध के रूप और प्रकृति में वैविध्य होता है। भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम एवं सर्वाधिक समृद्ध संस्कृति है। अन्य देशों की तुलना में भारत वर्ष में पारिवारिक व सामाजिक जीवन में नारी की भूमिका अत्यंत गौरवप्रद है। वेदकालीन संस्कृति और सभ्यता ने पारिवारिक और सामाजिक स्वस्थ संरचना में नारी को निर्णायक माना है। भारतीय नारी बाहरी रूप से तो परंपरा में लिपटी हुई किंतु उसका चंचल कोमल मन तो आधुनिकता के उड़ान भरने को हर पल व्याकुल रहता है। यही कारण है कि उसे अवसर मिलता है तो वह आधुनिकता की ओर उन्मुक्त होकर उड़ान भरने लगती है चाहे यह उसके परिधान में हो। खानपान में हो या बात व्यवहार में हो। वह स्वयं को आधुनिक ही प्रदर्शित करना चाहती है। इसके ठीक विपरीत कुछ पलों के बाद वह अपने भारतीय संस्कृति और परिवेश में वापस लौट आती है। इसलिए कहा गया है की भारतीय नारी परंपरा और आधुनिकता का अतुल्य मिश्रण है।

''माँ ही मेरी दुनिया, माँ ही मेरा संसार''

अभिनीत पटैल
बी.ए. प्रथम वर्ष

माँ ही मेरी दुनिया, माँ ही मेरा संसार है।
कहीं और न मिले, ऐसा प्यार है।।
जिंदगी को सही राह में, मोड़ने वाली बयार है।
सुख–दुख में हमारे हमेशा, साथ निभाने को तैयार है।।
माँ ही मेरी दुनिया, माँ ही मेरा संसार है .....

औलाद के लिए माँ का दिल, हमेशा बेकरार है।
बच्चे के लिए उसने, सपने देखे हजार है।।
माँ ही मेरी दुनिया, माँ ही मेरा संसार है .....

परिवार के प्रति, श्रद्धा इनकी अपार है।
माँ के अंदर, देवी का रूप साकार है।।
माँ ही मेरी दुनिया, माँ ही मेरा संसार है .....

बिना भेदभाव के, करती वह सबको प्यार है।
इतनी प्यारी होने पर भी, वह लाचार है।।
माँ ही मेरी दुनिया, माँ ही मेरा संसार है।
कहीं और न मिले, ऐसा प्यार है।।

"कोविड-१९ का हमारे जीवन पर प्रभाव"

नेहा मिश्रा
बी.कॉम. द्वितीय वर्ष

आज जब हम 2021 में साँसें ले रहे हैं, तो हमें इसके लिए परमात्मा को प्रणाम और धन्यवाद देना चाहिए। क्योंकि हम जानते हैं कि गत वर्ष 2020 हम सभी के जीवन में संघर्षपूर्ण रहा। बच्चे, बूढ़े, जवान, कोई ऐसा वर्ग ना था जो कोरोना के प्रभाव से अछूता रहा हो। स्कूल–कॉलेज बंद थे कितने बच्चों की पढ़ाई छूट गई क्योंकि पढ़ाई ऑनलाइन जो हो गई थी, कितने लोगों के परिवार उजड़ गए, कितने लोग बेरोजगार हो गए, और जाने कितनों ने तो कई–कई दिनों तक अन्न का दाना तक नहीं देखा। वह भी बड़ी विषम परिस्थिति थी।

वर्ष 2019 के अंत–अंत में चीन के वूहान से शुरू हुआ कोरोना वायरस आज संपूर्ण विश्व में फैल चुका है। परंतु दुनिया भर में इसकी वैक्सीन के लिए जो प्रयास चल रहे हैं उन्हें देखकर लोगों में आशा की एक नई किरण जागी है। और गर्व की बात तो यह है कि हमारे भारत देश में टीकाकरण शुरू भी हो गया है। कहीं–कहीं पर तो स्कूल–कॉलेज, ट्रेनें, कारखाने इत्यादि फिर से शुरू होने लगे हैं। यह सब देख कर ऐसा प्रतीत होता है, जैसे जिन्दगी की गाड़ी फिर से पटरी पर आ रही हो।

कोविड–19 महामारी के चलते हुए दुष्प्रभावों को तो हम सभी जानते हैं । पर इससे काफी सकारात्मकता भी आई जो पहले या तो थी ही नहीं और अगर थी भी, तो बहुत कम। जैसे– जब लॉकडाउन के दौरान स्कूल–कॉलेज बंद हो गए थे, तब इस समस्या से निपटने के लिए ऑनलाइन शिक्षा का नया चलन ही शुरू हो गया। अब ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से वह बच्चे भी कक्षाओं में उपस्थित रहते हैं जो पहले स्कूल–कॉलेज ज्यादा दूर होने की वजह से कक्षा में उपस्थित नहीं हो पाते थे। अब हमारा आने–जाने में लगने वाला समय और हमारे निजी साधनों में उपयोग होने वाला ईंधन दोनों की बचत हो रही है। और घर बैठे–बैठे ही हम अपने शिक्षकों से सभी महत्वपूर्ण विषयों पर जानकारी ले सकते हैं। इसके चलते, पर्यावरण में होने वाले प्रदूषण में भी गिरावट आई है। दूसरा महत्वपूर्ण उदाहरण है– वाणिज्य क्षेत्र का

जहाँ एक लंबे समय से लोग पारंपरिक दुकानों से ही खरीददारी करना पसंद करते थे कोविड–19 के दौरान यह परंपरा भी छूट गई क्योंकि दुकानें एक लंबे अंतराल के लिए बंद जो हो गई थीं। अब बच्चों की कॉपी–किताब हो या किसी त्योहार या अन्य किसी समारोह के लिए कपड़ों और गहनों की खरीददारी हो, और सिर्फ इतना ही नहीं बल्कि रेल टिकट बुक करना, बिजली का बिल चुकता करना और यहाँ तक की किराने का सामान लाने तक लोग ऑनलाइन खरीददारी को ही तवज्जो देने लगे हैं। इसके पीछे का मुख्य कारण था कि दो गज की दूरी बनाना अनिवार्य है, क्योंकि अपनी सुरक्षा अपने हाथ ही है। तो ऑनलाइन खरीददारी के जरिए हम भीड़ में जाने से बच रहे हैं और यही इसका सबसे बड़ा फायदा है कि घर बैठे–बैठे हम अनेक वस्तुओं का एक साथ मुआयना कर सकते हैं और अपनी पसंद के अनुसार वस्तुओं की खरीददारी कर सकते हैं।

यह तो वह प्रभाव हैं, जो समाज के एक बड़े समूह पर देखने को मिला। अगर हम बात करें कि हर एक की जिन्दगी में कोविड–19 ने क्या सकारात्मकता दिखाई, तो वह कुछ ऐसा था कि किसी ने खाना बनाना सीख लिया, तो कुछ ने कई महत्वपूर्ण ऑनलाइन कोर्स किए जिससे उनके भविष्य को एक नई दिशा मिल सके, कुछ समाजसेवी संस्थाओं से जुड़े ताकि समाज का उत्थान कर सकें और कुछ ने तो अपने अन्य हुनर को पहचाना और इन्हें बढ़ावा देने के लिए सही और ठोस कदम भी उठाए। यकीनन इन सभी कार्यों से हमारे व्यक्तित्व का विकास हुआ है, जिससे आज हमें अपने आप पर, कल से ज्यादा आत्मविश्वास है। और लोग कहते भी तो हैं कि जब हमारा आत्मविश्वास दृढ़ और मज़बूत होता है, तब हमारे लिए कोई भी चुनौती मुश्किल नहीं रह जाती।

इन सभी पहलुओं पर ध्यान देने के बाद, एक बात जो हम हमेशा से सुनते आ रहे हैं, वह स्पष्ट हो गई कि हर बुराई अपने साथ कोई न कोई अच्छाई ज़रूर ले कर आती है। ऐसा ही कुछ हुआ कोविड–19 के संदर्भ में भी। यह एक जानलेवा महामारी है, परन्तु इसके होते हुए भी हमारी जिन्दगी की रफ़्तार रूकी नहीं और लोगों ने कई ऐसे महत्वपूर्ण काम किए जो शायद पहले न कर पाते। इस स्थिति को देखने के बाद, इससे यही निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि – परिस्थितियाँ कैसी

भी हों–अच्छी या बुरी, हमें उन अत्यंत दयालु और परोपकारी मार्गदर्शक परमपिता परमेश्वर में अपने विश्वास को बनाए रखना चाहिए, और जिन्दगी की रफ़्तार को बिना कम किए, निरंतर आगे बढ़ते रहना चाहिए। और फिर हम पाएंगे की हालात पहले से काफी अच्छे हो गए हैं।

अंत में संसार की मंगल कामना करते हुए,

"सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामया,

सर्वे भद्राणि पश्यंतु, मां कश्चित् दुख भागभवेत्।"

भारतीय नारी: परम्परा और आधुनिकता का संघर्ष

वंदना कुशवाहा
बी.ए. द्वितीय वर्ष

हमारी भारतीय सभ्यता और संस्कृति, विश्व की सबसे पुरानी सभ्यता और संस्कृति में से एक मानी गयी है और हमारी भारतीय सभ्यता और संस्कृति से ही विश्व की कई सारी परंपराओं का जन्म हुआ है। इस तरह से हम कह सकते हैं कि हमारी भारतीय परंपरा कई सारी परंपराओं की जन्मदात्री है और इसके साथ–साथ हमारी भारतीय सभ्यता और संस्कृति में जो स्थान नारी को दिया गया है वह स्थान किसी और को प्राप्त नहीं है, क्योंकि नारी ही हमारे समाज में अलग–अलग रूपों से अपने आप को प्रकट करती हैं और अपने दायित्व का निर्वहन करती हैं। जो सहन–शक्ति नारी के अंदर है वह सहन–शक्ति संसार के किसी और प्राणी के अंदर नहीं है। हम सभी के जीवन में जिस तरह से प्रेम का संचार नारी अपने विभिन्न रूपों से करती है, ऐसा प्रेम इस संसार का काई भी प्राणी प्रकट नहीं कर सकता।

नारी ही है जो एक होते हुए भी कई सारे रूपों में खुद को साबित करती है, कहीं माँ के रूप में तो कहीं बहन के रूप में तो कहीं बहू के रूप में तो कहीं पत्नी के रूप में। भारतीय सभ्यता और संस्कृति में स्त्री ही सृष्टि की समग्र अधिष्ठात्री है, समस्त सृष्टि ही स्त्री है क्योंकि हमारे ब्रहमांड में बुद्धि, निद्रा, सुधा, छाया, तृष्णा, जाति, लज्जा, शांति श्रद्धा, चेतना और लक्ष्मी आदि अनेक रूपों में स्त्री ही व्याप्त है। भारतीय इतिहास में रानी लक्ष्मीबाई, जीजाबाई, अहिल्या बाई, सावित्री आदि नारियों ने अपनी क्षमता के बल पर खुद को प्रमाणित किया और नारी की गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाया है। हम यह कह सकते हैं कि नारी इस ब्रहमांड के विधाता की प्रतिनिधि है।

इस धरती पर जब इंसान किसी भी विकट स्थिति में खुद को पाता है या जब वह खुद को बेबस, लाचार पाता है। उस समय इंसान के मुंह से सिर्फ और सिर्फ एक ही शब्द निकलता है और वह है माँ। क्योंकि ममता रूपी छाँव ही वह छाँव है जिसमें आकर इंसान को सबसे ज्यादा सुकून मिलता है और इस जहाँ के सारे दर्द

और तकलीफ से इंसान खुद को महफूज पाता है और माँ, नारी का ऐसा रूप है जिससे नारी के समस्त रूपों का प्रार्दुभाव हुआ है। लेकिन आज के वक्त में, समाज में, महिलाओं और बच्चियों की स्थिति के बारे में जब सोचते हैं, तब मन बहुत ही ज्यादा व्यथित हो जाता है। क्योंकि आज के समय में नारी हर तरह से संघर्ष कर रही है। नारी खुद को साबित करने के लिए संघर्ष कर रही है। परन्तु इतने संघर्ष के बाद भी नारी ने खुद को सबसे ज्यादा स्थापित किया है, अपने आप को हर एक क्षेत्र में साबित करने में सफलता भी पायी है और अपने जुझारू व्यक्तित्व और सहनशीलता की वजह से ही आज नारी हर एक क्षेत्र में अपनी बुलंदी का झंडा गाड़ रही है।

इन सब के बावजूद जो बात मन को सबसे ज्यादा तकलीफ देती है, वह है, कि नारी ही सबसे ज्यादा त्याग क्यों करे? सारा दर्द सिर्फ नारी के लिए ही क्यों? हर तरह के शोषण का शिकार आखिर नारी ही क्यों होती है? जो हम सभी की जननी है, जो हम सभी की पालक है, उस के ऊपर आखिर इतना अत्याचार क्यों और आखिर कब तक ऐसा होता रहेगा? हर तरह सिर्फ और सिर्फ नारी की चीख ही सुनाई देती है, कहीं नारी का मानसिक शोषण हो रहा है, तो कहीं नारी का शारीरिक शोषण हो रहा है, कहीं नारी दहेज की आग में जल रही है तो कहीं तेजाब में झुलस रही है, कहीं नारी पुरूष समाज के तानों को सह रही है जो कहीं झूठी इज्जत और झूठी शान के नाम पर नारी की हत्या की जा रही है और तो और सबसे ज्यादा दर्दनाक पहलू यह है कि गर्भ में आते ही, इस दुनिया में कदम रखते ही उनको खत्म कर दिया जाता है।

गर्भ में आने के बाद से लेकर जीवन के आखिरी सांस तक नारी पर सिर्फ और सिर्फ अत्याचार ही होता है और इसी अत्याचार के बीच में नारी अपने विभिन्न रूपों से इस समाज का पालन पोषण भी करती है और खुद के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए इस समाज से लड़ाई भी करती है ..... वाह, विधाता की अनमोल रचना! नारी, जो अपना संपूर्ण जीवन दूसरों के लिए त्याग करके गुजार देती है और खुद दर्द सहती रहती है। ऐसे में बस एक ही सवाल बार–बार मन में कौंधता रहता है कि आखिर कब तक नारी अग्नि परीक्षा देती रहेगी? आज के समय में जब हम

खुद को आधुनिक कहते हैं, ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यही है, कि क्या वाकई हम सभी आधुनिक हैं? सिर्फ आधुनिक कपड़े पहनने से और आधुनिक वस्तुओं का उपयोग करने मात्र से कोई आधुनिक नहीं बन सकता। समाज और इंसान आधुनिक बनता है अपने विचारों से और मुझे यह कहने में बिल्कुल भी हिचक नहीं हो रही कि हम बदलते वक्त में आधुनिक नहीं बल्कि और ज्यादा पिछड़े हो गए हैं। क्योंकि हम खुद को आधुनिक मानें भी तो आखिर किस आधार पर। गर्भ में पल रही बच्चियों को मार देना क्या आधुनिकता है? बच्चियों को पढ़ने लिखने में बंदिशें लगाना क्या आधुनिकता है? बच्चियों का शोषण करना क्या आधुनिकता है?

नारी को दबा कर रखना और उनके सपनों को तोड़ देना क्या आधुनिकता है? दहेज के नाम पर नारी पर अत्याचार करना और जला देना क्या आधुनिकता है? खोखली इज्जत और शान के नाम पर बच्चियों की हत्या कर देना क्या आधुनिकता है? कार्यस्थल पर महिलाओं के साथ गैर मानवीय व्यवहार करना क्या आधुनिकता है? और न जाने कितनी ऐसी घटनाएँ हैं, जो हमारी बच्चियों के साथ, महिलाओं के साथ हमारे समाज में हो रही हैं। नारी के दर्द और तकलीफों के बारे में सोचते–सोचते बस एक ही बात मन में आती है कि, हमारी पुरातन सभयता और संस्कृति में नारी को जो स्थान दिया गया था उसे हम सभी ने मिलकर नारी से छीन लिया है, इसके लिए समाज का हर एक व्यक्ति जिम्मेदार है और हम सभी ने नारी को घुट–घुट कर जीने के लिए मज़बूर कर दिया है। हम सभी को यह समझना होगा कि, अगर नारी जगत जननी है तो नारी काली भी है, और जब नारी अपने विनाशकारी रूप में आती है उस समय प्रलय में सब कुछ खत्म कर देती है।

अंततः समाज में अगर नारी के सम्मान की रक्षा नहीं की गई तो वह दिन दूर नहीं जब हम सभी जीवन के आखिरी चक्र में खुद को पाएँगे क्योंकि जो जीवन दायिनी है अगर वही सुरक्षित नहीं है ऐसी परिस्थिति में सृष्टि का सुचारू रूप से चल पाना संभव नहीं है।

नारी का संघर्ष

प्रतीक्षा नागदेव
बी.कॉम. प्रथम वर्ष

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्ततफलाः क्रियाः।।

इस सूक्ति का सामान्य अर्थ यह है कि जहाँ नारी की प्रतिष्ठा और सम्मन होता है वहाँ देव शक्तियाँ होती हैं और जहाँ नारी का निरादर होता है वहाँ नाना प्रकार के विघ्न उत्पन्न होते हैं। नारी को इस आधार पर एक महान् देवी के रूप में चित्रित किया गया और उसके प्रति विश्वस्त और श्रद्धावान् होने के लिए आवश्यक कहा गया है। नारी के इसी श्रद्धेय और पूज्य स्वरूप को स्वीकारते हुए कविवर श्री जयशंकर प्रसाद जी ने अपनी महाकृति कामायनी में लिखा है:—

नारी। तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग पगतल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुंदर समतल में।।

इस दृष्टिकोण के आधार पर नारी पूज्या और महान् है जिससे जीवन अमृत तुल्य बन जाता है। नारी का यह सम्माननीय स्वरूप प्राचीन काल में बहुत की सशक्त और आकर्षक रहा है। सीता, मैत्रेयी, अनुसुइया, सती सावित्री, दमयन्ती आदि भारतीय नारियाँ विश्व पटल पर गौरवान्वित हैं। लेकिन दुश्चिन्ता का विषय यह है कि जब से हमारे देश पर विजतीय राज्य विस्तार हुआ, हमारी भारतीय नारी दीन, हीन और मलीन हो गई है। संध्या काल की मीरा और आधुनिक काल की लक्ष्मीबाई रानी और आज के इतिहास में श्रीमती इन्दिरा को छोड़कर शेष नारियाँ तो आज शोषित और पीड़ित दिखाई दे रहीं हैं। उसे आज पुरूष के अधीन रहना पड़ रहा है। उस पर आज अपनी भावनाओं को स्वतंत्र रूप से प्रकट करने पर प्रतिबन्ध लगाया जा रहा है। इसलिए नारी को आज अबला और बेचारी विशेषणों से विश्लेषित किया जा

रहा है। इन सब दुःखद और दुर्दशा ग्रस्त स्थिति में पड़ी हुई नारी को देखकर उसके प्रति संवेदनशील होकर किसी कवि का यह कहनाः–

नारी जीवन, झूले की तरह,

इस पार कभी, उस पार कभी।

आँखों में असुवन धार कभी,

होठों पर मधुर मुस्कान कभी।।

प्राचीन काल में हमारे समाज में नारी का महत्व नर से कहीं बढ़कर होता था। किसी समय तो नारी का स्थान नर से इतना बढ़ गया था कि पिता के नाम के स्थान पर माता का ही नाम प्रधान होकर परिचय का सूत्र बन गया था। धर्म द्रष्टा मनु ने नारी को श्रद्धामयी और पूजनीया मानते हुए महत्व प्रदर्शित किया हैः

"यत्रनार्यस्तु पूज्यते, रमन्ते तत्र देवताः।"

अर्थात् जहाँ नारी की पूजा–प्रतिष्ठा होती है वहाँ देवता रमण करते हैं, निवास करते हैं। धीरे–धीरे समय के पटाक्षेप के कारण नारी की दशा में कुछ अपूर्व परिवर्तन हुए। वह अब नर से महत्वपूर्ण न होकर उसके समक्ष श्रेणी में आ गई। अगर पुरूष ने परिवार के भरण–पोषण का उत्तरदायित्व सम्भाल लिया तो घर के अंदर के सभी कार्यों का बोझ नारी ने उठाना शुरू कर दिया। इस प्रकार नर और नारी के कार्यों में काफी अंतर आ गया। ऐसा होने पर भी प्राचीन काल की नारी ने हीन भावना से ग्रसित न होकर स्वतंत्र और आत्मविश्वस्त होकर अपने व्यक्तित्व का सुंदर और आकर्षक निर्माण किया। पंडित मिश्रा की पत्नी द्वारा शंकराचार्य जी के परास्त होने के साथ गार्गी, मैत्रेयी, विद्योत्तमा आदि विदुषियों का नाम इसी श्रेणी में उल्लेखनीय है। समय के बदलाव के साथ नारी जीवन–दशा में अब बहुत परिवर्तन आ गया है। नारी आज समाज में प्रतिष्ठित और सम्मानित हो रही है। वह अब घर की लक्ष्मी ही नहीं रह गयी है अपितु घर से बाहर समाज का दायित्व निर्वाह करने के लिए आगे बढ़ आयी है। वह घर की चार दीवारी से अपने कदम को बढ़ाती हुई समाज की विकलांग दशा को सुधारने के लिए कार्यरत हो रही है। इस प्रकार से नारी का स्थान हमारे समाज में आज अधिक समादृत और प्रतिष्ठित है।

सपनों में रख आस्था

मानसी सक्सेना
बी.ए. तृतीय वर्ष

सपनों में रख आस्था कर्म तू किए जा,
त्याग से ना डर आलस परित्याग किए जा।
गलती कर न घबरा,
गिरकर फिर हो जा खड़ा।
समस्याओं को रास्तों से निकाल दे,
चट्टान भी हो तो ठोकर से उछाल दे।
रख हिम्मत तूफानों से टकराने की,
जरूरत नहीं है किसी मुसीबत से घबराने की।
तो पाना है बस उसकी एक पागल की वो चाहत कम,
करता रह कर्म मगर साथ में खुदा की भी इबादत भी कर।
फिर देख किस्मत क्या रंग दिखलाएगी,
तुझको तेरी मंजिल मिल जाएगी, मंजिल मिल जाएगी।

रिश्ता

अमानत रौम्यूल मिश्रा
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

कोलकाता में जैसे ही मैं अपने घर पहुँची सपना भाभी मुझसे लिपटकर रोने लगी। उन्हें किसी बात का कोई ख्याल नहीं रहा कि इस तरह बाहर से आए किसी भी इंसान से लिपटना आज–कल सुरक्षित नहीं है। "प्रिया–प्रिया पापा जी.....!" मैं चौंक उठी और पूछी, क्यों, क्या हुआ पापा जी को?" तब भाभी ने कहा, "तुम्हें तो सिर्फ हार्ट अटैक ही का बताया था और कहा था कि वे हॉस्पिटल में एडमिट हैं तथा धीरे–धीरे रिकवर भी कर रहे हैं, पर सच्ची बात तो ये है कि डॉक्टर ने तुरन्त बायपास सर्जरी की सलाह दी है वरना दूसरा हार्ट अटैक भी आ सकता है जो बहुत खतरनाक हो सकता है।" मैं फौरन बोली, "तो करते क्यों नहीं बायपास का आपरेशन दिक्कत क्या है?

भाभी थोड़ा संयत होते हुए बोली, "एक हो तो बताऊँ। वो हॉस्पिटल वाले पहले रूपये जमा करने को कहेंगे। अभी शुरूआती अमाउंट तो पड़ोस वाले मोहन अंकल जी ने जमा कर दिया है। उनका तो खैर आगे–पीछे वापस कर ही देंगे। तब मैंने भाभी को बोली कि चिंता मत करो, रूपयों की व्यवस्था हो ही जायेगी।

फिर भाभी बोल उठी, "अरे अभी एक चिंता और भी है! पापा जी का ब्लड ले लेना भी बहुत जोखिम भरा हो सकता है। क्या करें कुछ समझ में नहीं आ रहा।"

"भाभी आप थोड़ी देर शांत होकर बैठो। निकालने से ही रास्ते निकलते हैं। घबराने से कुछ नहीं होगा।" फिर कुछ सोचते हुए मुझे याद आया और मैंने अपने पति अमित को फोन लगाया। उनका ब्लड ग्रुप 'बी–नेगेटिव' है। तब मम्मी को कामवाली बाई के भरोसे छोड़कर एक ही दिन के लिए अमित आ गए। कभी–कभी कुदरत के बारे में सोचती हूँ कि बेटा विदेश से आ नहीं सकता, सगी बेटी और बहू का नहीं, बल्कि दूसरे किस अनजान व्यक्ति का जो अब उनका दामाद है, सर्वथा अलग परिवार का उसका रक्त मिल जाता है और एक इंसान नई जिंदगी पा जाता है। क्या कुदरत ने 'रक्तदान' का वरदान देकर सारी मानवता को जोड़े रखने का अनोखा कार्य नहीं किया है? खून लेने और देने के लिए खून के रिश्ते की ज़रूरत नहीं होती। प्रकृति यह व्यवस्था बनाकर मानवता के रिश्तों को मानवीय स्वरूप प्रदान करती है।

आधुनिक शिक्षा

काजोल चक्रवर्ती
बी.कॉम. तृतीय वर्ष

प्रस्तावनाः– शिक्षा लोगों के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। अच्छी शिक्षा प्राप्त करना देश के हर नागरिक का अधिकार है। शिक्षित व्यक्ति अच्छी शिक्षा के बलबूते अपने कैरियर का निर्माण करता है। शिक्षण और अन्य महान आविष्कारों में प्रगति के कारण 1950 की तुलना में शिक्षा आज बहुत विविध है। आजकल वर्तमान जीवन में ऑनलाईन शिक्षा का बोलबाला है। ऑनलाईन शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जहाँ शिक्षक दूर से और दुनिया के किसी भी कोने से इंटरनेट के माध्यम से जुड़ सकता है। शिक्षक स्काइप, जूम इत्यादि एप के ज़रिये वीडियो कॉल करते हैं और बच्चे लैपटॉप या कंप्यूटर पर शिक्षक को देख और सुन सकते हैं। शिक्षक बच्चों को पढ़ाने के लिए अपने कंप्यूटर की स्क्रीन शेयर करते हैं जिससे बच्चे घर बैठे शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

लॉकडाउन के इस वक्त जहाँ सभी शिक्षा केंद्र बंद हैं। वहाँ ऑनलाईन शिक्षा ने अपनी जगह ना ली है। आज दुनिया के सारे देशों के बच्चे ऑनलाईन शिक्षा का उपयोग करके आसानी से पढ़ाई कर पा रहे हैं। ऑनलाईन शिक्षा प्राप्त करने के लिए अच्छी और तीव्र गति की इंटरनेट कनेक्टिविटी की ज़रूरत है। शिक्षक दूरस्थ शिक्षा में वीएच अस वीडियो, डीवीडी और इंटरनेट के पाठ्यक्रमों के अनुसार बच्चों को पढ़ाते हैं। 1993 में ऑनलाईन शिक्षा कानूनी कर दी गयी और यह एक अनोखा तरीका है जिसके माध्यम से सभी उम्र के छात्र पढ़ सकते हैं। इंटरनेट की सहजता के कारण वर्षों से ऑनलाईन शिक्षा लोकप्रिय हो रही है।

ऑनलाईन शिक्षा के फायदेः– ऑनलाईन ट्यूशन के साथ अंतिम क्षणों में परिवर्तन आ सकता है। शिक्षक जब चाहे तब क्लास रख सकता है और स्थगित भी कर सकता है। इसमें यात्रा नहीं करनी पड़ती है और काफी समय बच जाता है। ऑनलाईन स्क्रीन शेयरिंग का उपयोग करके विषयों को समझना आसान हो गया है। ऑनलाईन शिक्षा एक उत्कृष्ट शिक्षा का उदाहरण है। प्रौद्योगिकी ने शिक्षण व्यवस्था में बदलाव लाया। ऑनलाईन ट्यूशन की सबसे अधिक आपको शिक्षण संबंधित विकल्प देता है। ऑनलाईन व्हाईटबोर्ड का उपयोग फाईल लिंक और वीडियो भेजने

के कारण शिक्षक अपनी रचनात्मक शिक्षा को विद्यार्थियों तक पहुंचा सकता है। इसमें शिक्षक को विभिन्न प्रकार से बच्चों को पढ़ाने का भरपूर मौका मिलता है।

प्रभावी शिक्षाः— ऑनलाईन ट्यूशन के कारण यात्रा नहीं करनी पड़ती है। इससे समय की बचत हो जायेगी। इंटरनेट का आसानी से उपलब्ध होना ऑनलाईन शिक्षा के लिए वरदान साबित हुआ है।

ऑनलाईन शिक्षा के नुकसानः— ऑनलाईन ट्यूशन करने से कुछ बच्चे बिगड़ जाते हैं। ऑनलाईन ट्यूशन बच्चों को ऑफलाईन ट्यूशन के मुकाबले कम समय के लिए शिक्षा प्रदान करता है। सिर्फ एक तरफा अध्यापक बच्चों को पढ़ाता है, उसमें बच्चा ज्यादा समय के लिए क्लासवर्क नहीं कर पाता है। ऑफलाईन शिक्षक बच्चे को नैतिक शिक्षा प्रदान करता है जब कि ऑनलाईन शिक्षण में ऐसा नहीं हो पाता है।

अच्छी इंटरनेट का होना अनिवार्यः— ऑनलाईन ट्यूशन को अच्छे नेटवर्क की आवश्यकता होती है। जहाँ नेटवर्क नहीं है वहां ऑनलाईन शिक्षा कराना मुश्किल है। खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों के पास तीव्र गति वाले इंटरनेट की सुविधा नहीं होती है। इसलिए वहां ऑनलाईन शिक्षा अभी भी उपलब्ध नहीं है।

शिक्षा के लिए पर्याप्त योजना का अभावः— पहले बच्चे निजी ट्यूटर के पास पढ़ते थे तब बच्चा एक अध्ययन सूची के मुताबिक, निश्चित अवधि के लिए पुस्तकों के साथ पढ़ने बैठता था। यह वर्षों तक चली आ रही परंपरा है। ऑनलाईन शिक्षा के तहत ऐसी कोई विशेष शिक्षा सूची तैयार नहीं हुई है। बच्चे स्कूल में जितने अनुशासित रह सकते हैं ऑनलाईन क्लासेज में इतने गंभीर नहीं होते हैं।

अच्छी इंटरनेट सेवा का होना अनुवार्यः— ऑनलाईन ट्यूशन को अच्छे नेटवर्क की आवश्यकता होती है। जहाँ नेटवर्क नहीं है वहां ऑनलाईन शिक्षा कराना मुश्किल है। खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों के पास तीव्र गति वाले इंटरनेट की सुविधा नहीं होती है। इसलिए वहां ऑनलाईन शिक्षा अभी भी उपलब्ध नहीं है।

निष्कर्षः— ऑनलाइन शिक्षा के सभी तरह के पहलू हैं। लेकिन यह कहना गलत न होगा कि लॉकडाउन में ऑनलाइन शिक्षा ने बच्चों, शिक्षकों और शिक्षा संगठनों की काफी मदद की है और शिक्षा के आदान प्रदान को रूकने नहीं दिया। प्रौद्योगिकी ने इतनी उन्नति कर ली है कि हम घर से और दुनिया के किसी भी कोने में बैठकर इंटरनेट के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

निबंध

ऑन लाईन शिक्षा: समाधान और समस्या

गुरकान यादव
बी.ए. तृतीय वर्ष

शिक्षा लोगों के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। अच्छी शिक्षा प्राप्त करना हर देश के नागरिक का अधिकार है। शिक्षित व्यक्ति अच्छी शिक्षा के बलबूते पर अपने कैरियर का निर्माण करता है। शिक्षण और अन्य महान आविष्कारों में प्रगति के कारण 150 की तुलना में शिक्षा आज बहुत विविध है। आजकल वर्तमान जीवन में ऑन लाईन शिक्षा का बोलबाला है। ऑनलाईन शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जहाँ शिक्षक दूर से और दुनिया के किसी भी कोने से इंटरनेट के माध्यम से जुड़ सकता है। शिक्षक स्काइप, जूम, गूगल रूम इत्यादि एप्प के जरिये वीडियों कॉल करते हैं और बच्चे लेपटॉप या कम्प्यूटर पर शिक्षक को देख और सुन करते हैं। शिक्षक बच्चों को पढ़ाने के लिए अपने कम्प्यूटर की स्क्रीन शेयर करते हैं जिससे बच्चे घर बैठे शिक्षा प्राप्त कर पाते हैं।

लॉकडाउन के इस वक्त जहाँ सभी शिक्षा केन्द्र बंद है। वहाँ ऑनलाईन शिक्षा ने अपनी जगह बना ली है। आज दुनिया के सारे देशों के बच्चे ऑनलाईन शिक्षा का उपयोग करके आसानी से पढ़ाई कर पा रहे हैं। ऑनलाईन शिक्षा प्राप्त करने के लिए अच्छी और तीव्र गति की इंटरनेट कनेक्टिविटी की जरूरत है। शिक्षक दूरस्थ शिक्षा में वीएचअस वीडियो, डीवीडी और इंटरनेट के पाठ्यक्रमों के अनुसार बच्चों को पढ़ाते हैं। 1993 में ऑनलाईन शिक्षा कानूनी कर दी गयी और यह एक अनोखा तरीका है। जिसके माध्यम से सभी उम्र के छात्र पढ़ सकते हैं। इंटरनेट की सहजता के कारण वर्षों से ऑनलाईन शिक्षा लोकप्रिय हो रही है।

आज की वर्तमान स्थितियों में बच्चे स्कूल और कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त नहीं पा रहे हैं लेकिन ऑनलाईन शिक्षा ने रास्ता काफी आसान कष्ट दिया हैं। बच्चे निश्चित होकर घर पर अपनी पढ़ाई पूरी कर पा रहे हैं। बहुत बच्चे दूर शिक्षिकों के घर या कोचिंग संस्थानों में जाकर पढ़ाई नहीं कर पाते हैं वह ऑनलाईन डिग्री हासिल कर लेते हैं। आजकल ज्यादातर प्रोफेशनल कोर्सेज ऑनलाईन होते हैं। विद्यार्थी ऑनलाईन पढ़ते हैं और ऑनलाईन परीक्षा देकर अपनी निश्चित डिग्री प्राप्त कर लेते हैं।

ऑनलाईन शिक्षा से हम सिर्फ भारत में ही नहीं विदेशों में दी जाने वाली जरूरी शिक्षा हासिल कर लेते हैं। इससे हमारा ज्ञान काफी विकसित होता हैं। ऑनलाईन शिक्षा की वजह से विद्यार्थियों को कहीं जाना नहीं पड़ता और इससे यात्रा के समय की बचत हो जाती हैं। अपने सुविधा अनुसार छात्र वक्त का चुनाव कर ऑनलाईन क्लासेज में शामिल हो जाते हैं।

ऑनलाईन शिक्षा में विद्यार्थी शिक्षक द्वारा ली गयी क्लास को रिकार्ड कर सकते हैं। जिससे कक्षा के पश्चात् विद्यार्थी रिकॉर्डिंग को पुनः सुन सकते हैं और कहीं शंका हो तो बेझिझक शिक्षक से दूसरे क्लास में पूछ सकते हैं। इससे संकल्पना यानी कांसेप्ट छात्रों को समझा जाता है। ऑनलाईन पढ़ाने के लिए शिक्षक ने कुछ कार्यक्रमों को फ्लैश कार्ड और गेम जैसे बनाया है जो छात्र के सीखने के अनुभव को बढ़ाता है। सिविल सेवा परीक्षा और इंजीनियरिंग और मेडिकल की पढ़ाई शिक्षा संस्थानों में नहीं बल्कि ऑनलाईन हो रही है। यह कहना मुश्किल है कि कोरोना काल कब तक चलेगा। इसलिए विद्यार्थीओं को सामाजिक दूरी का पालन करना अनिवार्य हैं। इन परिस्थितियों में ऑनलाईन शिक्षा एक बेहतर विकल्प है। आज कल तेजी से बढ़ती दूरी, दुनिया के पास समय की कमी है और वेब के माध्यम से जाने वाली सभी सेवाएँ लोकप्रियता प्राप्त कर रही हैं।

ऑनलाईन शिक्षा की तरफ ज्यादा पैमाने में आकर्षित हो रहे हैं क्योंकि यह सुविधाजनक होने के संग पैसे और समय बचाता है। कुछ बच्चे जो ग्रामीण परिवार से जुड़े हैं जहाँ ऑनलाईन शिक्षा का प्रचलन नहीं है। उनके पास कम्प्यूटर और इंटरनेट की सुविधा इत्यादि नहीं है। वह ऑनलाईन शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ हैं। हर परिवार इंटरनेट का खर्चा नहीं उठा पाता है। इसलिए लॉकडाउन जैसी परिस्थितियों में उन छात्रों को मुश्किल का सामना करना पड़ रहा है।

ऑनलाईन शिक्षा के कई ऐसे लोकप्रिय लर्निंग एप्प है जैसे वाईजू, मेरिटनेशन जिसमें सीबी एसई के पाठ्यक्रम की सभी कक्षा की विषय सामग्री मौजूद है जिसके जरिये बच्चे वीडियोस देखकर मुश्किल पाठ को आसानी से समझ सकते हैं। ऑनलाईन शिक्षा प्रणाली को दिलचस्प बनाने के लिए हर शिक्षक बेहतरीन टूल्स का इस्तेमाल करता है ताकि बच्चों को सीखने में आसानी हो।

निष्कर्षः— ऑनलाईन शिक्षा उन लोगों के लिए बढ़िया विकल्प है जो काम करते हुए या घर की देखभाल करने के साथ अपनी पढ़ाई जारी रख पाते हैं। अपनी सुविधा अनुसार वह ऑनलाईन शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

बेटी हूँ

वैभव झारिया
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

1 मैं भी साँस लेती हूँ, पत्थर नहीं आपकी बेटी हूँ।
आप से ही जीती हूँ पापा, मैं बेटा नहीं बेटी हूँ।

2 क्यूँ मुझको भुला दिया, जीवन के पहले ही मिटा दिया।
आप से ही बनी हूँ, बस प्यार की भूँखी हूँ।

3 बस, एक मौका दे दो मुझे, फिर हर कदम आजमा लो मुझे।
हर लड़ाई जीत कर दिखाऊँगी, मैं आपका बेटा बन जाऊँगी।

4 बस एक कदम तो बढ़ाइये, मैं हर कदम में आपके साथ आऊँगी।
कहीं लड़खड़ाये गर आपके कदम, मैं हाथ आगे बढ़ाऊँगी।

5 मुझे दुनिया नहीं देखनी, मुझे आपको देखना है।
मैं आपमें ही अपनी दुनिया बसाऊँगी।

6 पापा, मुझे मत डालो उस कचरे के डिब्बे में, जिसमें मेरी मौत, मेरी बर्बादी है।
अरे आप क्यूँ नहीं समझते, मेरी आबादी मेरी खुशहाली में आपकी खुशहाली है।

मुजरिम आज़ाद

एंजिला सैलेस्टीन
बी.ए. प्रथम वर्ष

हाँ, डर जाता हूँ मैं,
तुम–सा कद नहीं मेरा।
बेड़ियों से जूझता हूँ,
अंधेरों को अपनाता हूँ,
ये पिंजरा ही मेरा सबेरा।
पूछने से डरता हूँ,

और पास जब तुम आते हो,
हर कोशिशों के बाद खुद को,
बेआवाज मैं पाता हूँ।
कहां से आया हूँ।
किसी की याद में भी हूँ।
नीली सी, धुंधली जो तस्वीर है,
साथी को खोने की भी तो पीर है।

मेरे गुस्से और डर को देख,
खामोश तुम हो जाते हो,
फिर मेरी ओर नज़रें झुका,
गहरी सोच में डूब जाते हो।
अपने ज़मीर को, फिजूल तर्कों से दफनाते हो,
फिर मुझसे दूर हो कर अपनी जिन्दगी में मसरूफ़ हो जाते हो।
हां उदास हूँ मैं,
तुम भी हुआ करते थे,
महीनों चारदीवारी में रहकर
आज़ादी की दुआ करते थे।
तो हूँ मैं भी उदास,
नीले आसमान की तलाश है मुझे,
खुली हवाओं की प्यास है मुझे,
अपनों से मिलने की आस है मुझे।

लक्ष्य

सयांग प्रभा दुबे
बी.ए. प्रथम वर्ष

चलते जाना राही तू राही चलते जाना
मिल जुलकर रहना इस जग में मंजिल को है पाना
मुश्किल राहें हों कितनी भी मन में न घबराना
दृढ़ विश्वास और दृढ़ निश्चय तेरा अचल खजाना
अच्छे बुरे, पराए अपने, यश अपयश उलझाना
स्तुति निंदा से ऊपर उठ, लक्ष्य बना न नाना
क्षुद्र प्रलोभन मधुर–मधुर रस, इसमें उलझ न जाना
भावी साथी प्रबल विरोधी आज बने अनजाना
चलते जाना राही तू राही चलते जाना।

समाज में जागरूकता लाओ

अमानत एस. मिश्रा
बी.एस.सी

समाज में जागरूकता लाओ
फैली हुई कुरीतियों को दूर भगाओ
समाज में जागरूकता लाओ।

बाल विवाह, भ्रूण हत्या दूर करो।
देश के युवकों को नैतिक पाठ पढ़ाओ
भ्रष्टाचारियों के खिलाफ लड़ने का पाठ,
माता–पिता, गुरूजनों का सम्मान करना सिखाओ
समाज में जागरूकता लाओ, जागरूकता लाओ।
अपने देश को बचाओ, अपने देश को बचाओ।

अपने लड़के–लड़कियों को पढ़ाओ
गरीबों को आगे बढ़ाओ, अपने अधिकारों का ज्ञान कराओ
समाज में जागरूकता लाओ, देश की संस्कृति बचाओ
अपने देश को बचाओ, समाज में जागरूकता लाओ।

हर जन अपने वोट को समझे
वोट डालकर कर्तव्य को निभाओ
हर युवा वर्ग में जागरूकता लाओ
समाज में जागरूकता लाओ, अपने देश को बचाओ।

जागरूकता लाओ, जागरूकता लाओ
हर त्यौहार को धूम–धाम से मनाओ
देश के सांस्कृतिक पर्वों को बचाओ
समाज की कुरीतियों को दूर भगाओ
अपने देश को बचाओ, अपने जीवन को बचाओ
जागरूकता लाओ, जागरूकता लाओ, समाज में जागरूकता लाओ।

कविता

मुस्कान यादव
बी.ए. तृतीय वर्ष

मैं हूँ मानवता का गौरव
वैमनस्य का मापदंड
प्रेम का गौरव
और पुरूष का पाखंड
सहिष्णुता की परख
नयी पीढ़ी का मार्गदर्शन
धर्म में बाकी बची आस्था
और तीन तलाक का उतरन
घूंघट में छिपा साहस
शक्ति की उपासना
द्रोपदी का अट्टहास
और निर्भया को प्रताड़ित करती वासना
परित्यक्ता का आक्रोश
प्राचीन सभ्यता का अवशेष
अवहेलना, वेदना का शब्दकोष
और अंतिम मंजिल का शून्य शेष
मैं हूँ कुछ विशेष।

वर्ष २०२० संभावनाओं का वर्ष

पल्लवी केवट
बी.ए. तृतीय वर्ष

"जिस काम में सफल होने की संभावना ज्यादा हो उसको करने पर हम सफल होते हैं लेकिन जिस काम में असफलता की संभावना ज्यादा हो उसको करने पर हम सफल होते ही हैं।" हमारा जीवन अनंत संभावनाओं से परिपूर्ण है और प्रत्येक दिन एक चमत्कार की संभावना रखता है। वर्ष 2020 की शुरूआत भले ही चुनौतियों से हुई है, और पूरे विश्व को एक भयंकर महामारी का प्रकोप झेलना पड़ रहा है परंतु पूरा विश्व इस संकट के समय में भी अनेक संभावनाओं की खोज कर रहा है और सफल भी रहा है। प्रत्येक समस्या का समाधान अवश्य होता है परंतु उस समाधान को खोलने की संभावना जितनी अधिक होती है, उतना ही हमारी समस्या से सामना करने की शक्ति भी अधिक होती है।

जीवन अनंत संभावनाओं से भरा है परंतु शायद हमारी मुसीबतें उन्हें खोजने में और रास्ते तलाशने में कमजोर करती हैं, परंतु जब हम मेहनत, लगनशीलता और दृढ़ निश्चित होकर कार्य करते हैं तो सफल अवश्य होते हैं और पूरी संभावनाओं को तराशते हैं। महामारी के दौरान विश्व ने कई सारी चुनौतियों का सामना किया और कई सारी खोज संभव हो पाई। वर्ष 2020 में बहुत सी चीजें जो शायद कभी और नहीं होती वर्ष 2020 में संभव हो पाई। महामारी के दौरान किसी का काम नहीं रूकने दिया और घर से काम की शुरूआत की तथा 'ऑनलाइन–शिक्षा' संभव हो पाई। नए उद्यमों की शुरूआत संभव हुई।

एक छोटे से बीज में वट वृक्ष बनने की संभावना छिपी होती है और हम सभी में यह संमावना है। बस इसे खोजकर पोषित करने की जरूरत है। कोरोना जैसी महामारी का टीकाकरण वैक्सीन की इतने कम समय में खोजकर हमने वर्ष 2020 को संभावनाओं का वर्ष बनाया है।

आदर्श विद्यार्थी

सयांग प्रभा दुबे
बी.ए. प्रथम वर्ष

विद्यार्थी ही किसी भी देश का भविष्य होता है। आदर्श विद्यार्थी युवा पीढ़ी का पथ प्रशस्त करते हैं। विद्यार्थी शब्द 'विद्या+अर्थी' शब्दों के योग से बना है जिसका अर्थ है विद्या प्राप्त करने का इच्छुक या अभिलाषी व्यक्ति। जब कोई बालक या व्यक्ति नियमित रूप से विद्या प्राप्त कर रहा होता है उसे विद्यार्थी कहा जाता है। आदर्श विद्यार्थी विद्यालय में अपनी पढ़ाई पर ध्यान देता है और साथ ही साथ वह अन्य गतिविधियों में शामिल होते हैं। आदर्श विद्यार्थी वह नहीं हैं जो कक्षा में ज्यादा अंक लाए, या वह नहीं जिसे बड़े–बड़े पुरस्कार मिलें, आदर्श विद्यार्थी कहलाने का वही अधिकारी होता है जो पढ़ाई में अच्छा न केवल, मगर अच्छा इंसान भी है। आदर्श व्यक्ति वहीं होता है जो पुरस्कार जीतने के साथ–साथ दिल जीतने की क्षमता रखते हो। हर प्रतियोगिता में जो बढ़–चढ़कर भाग्य लेता है, जो खेलकूद में भी रूचि रखता है, वाद–विवाद की भी योग्यता रखता हो, वही विद्यार्थी आदर्श कहलाता है। अच्छा विद्यार्थी वही होता है जो बड़ों का सम्मान करे और छोटों से स्नेह रखे। अपने देश के प्रति सम्मान रखे, अपने देश के कानून और समाज का आदर करे। आदर्श विद्यार्थी वहीं होता है जो दूसरे विद्यार्थीयों के लिए उदाहरण बने। जो सभी धर्मों का सम्मान करे। वह जो हर परिस्थितियों मे सही फैसला ले सके। विद्यार्थी वही आदर्श होता है जो अपने माता–पिता का सम्मान करता हो, वह अनुशासन में रहता है, सुबह, जल्दी उठना, व्यायाम करने, पढ़ाई पर अच्छे से ध्यान देना। ऐसे ही आदर्शों पर चलने वाले विद्यार्थी बड़े होकर डॉक्टर, वकील, बिजनेस मैन, आई–पी–एस, आई–ए–एस ऑफीसर, पुलिस अफसर, बनते हैं और अपने देश के विकास व उन्नति में योगदान देते हैं।

हिन्दी विभाग

प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम

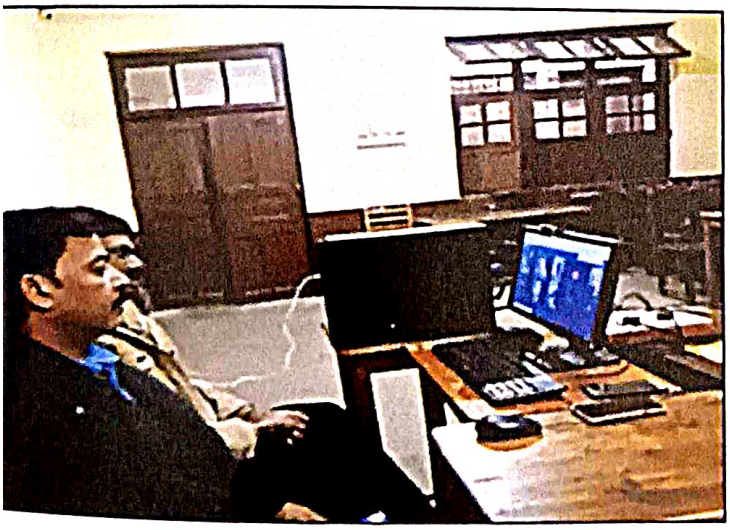

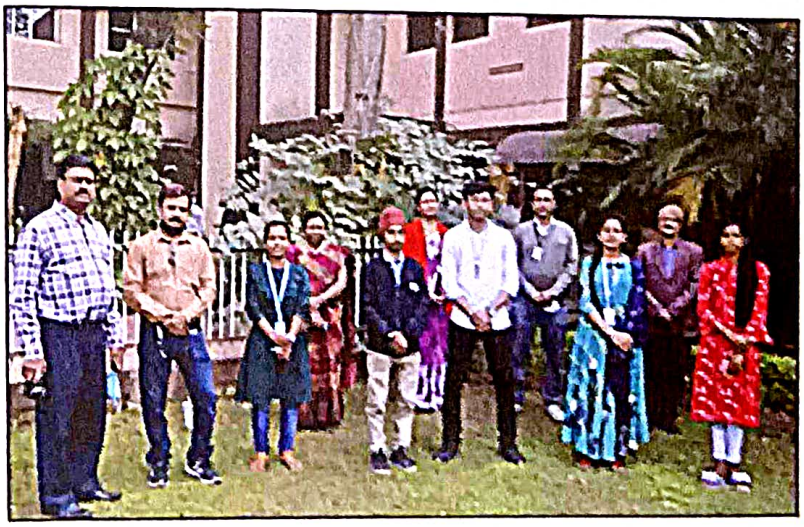

हिन्दी भाषाएँ हेतु कक्षाएँ

संत रविदास जयंती कार्यक्रम